‘‘देश बंदी’’ में देश के खेत–खलिहानों के कुछ जरूरी सवालऔर समाधान

कल सुबह छत्तीसगढ़ के छोटे से कस्बे कोंडागांव में लाक- डाउन (जिसे मैं हिंदी में देश बंदीकहता हूं) तोड़ने के अपराध में नगरपालिका ने पहली कानूनी कार्यवाही करते हुए एक दुकानदार पर दो हजार का जुर्माना किया गया, बकायदा रसीद भी काटी गई। हम सभी को लगा कि यह अच्छी और जरूरी कार्यवाही थी, लोगों ने इस कार्यवाही की तारीफ भी की। सुनने में यह घटना बेहद सामान्य लग सकती है, पर अगर संपूर्ण देश की कृषि के संदर्भ में महाराजा इसके निहितार्थ देखे जाएं, तो यह घटना सामान्य नहीं है।

वह दुकानदार जिस पर जुर्माने की कार्यवाही की गई दरअसल एक छोटा सा किसान-केंद्र था, यानी की खाद, बीज, दवाई ,कृषि यंत्रों की छोटी सी दुकान, जहां कल तड़के सुबह, पास के गांव के कुछ किसान खाद-दवाई, बीज आदि लेने आए थे, निश्चित रूप से यह किसान दुकान की पुराने ग्राहक तथा परिचित रहे होंगे और उन किसानों के अनुरोध पर ही इतनी सुबह दुकानदार ने दुकान खोलकर उन्हें बीज खाद दवाई देने का जोखिम उठाया होगा।

अब आते हैं हम माननीय प्रधानमंत्री जी की इक्कीस दिवसीय लाक- आउट की घोषणा पर, इस संदर्भ में सबसे पहले तो अब यह कहना चाहेंगे कि हम प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी, केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार की हर घोषणा का न केवल समर्थन करते हैं, बल्कि उनका शत् प्रतिशत पालन भी कर रहे हैं, तथा आगे भी निश्चित रूप से करेंगे। किंतु हमारा यह मानना है कि इस लाक-आऊट के संदर्भ में निश्चित रूप से कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बिंदु हैं,, देशहित में जिन पर ध्यान दिया जाना बेहद जरूरी है।

मुझे नहीं पता यह हमारी बातें माननीय प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी अथवा संबंधित उच्चाधिकारियों तक तक पहुंच पाएंगी भी या नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि मेरी बातें, मेरी इस पोस्ट से सीधे संबंधित, देश के उन करोड़ों किसान भाइयों तक पहुंच पाएगी अथवा नहीं जो कि इन 21 दिनों में सीधे-सीधे सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले हैं, क्योंकि हमारे ज्यादातर किसान भाई इंटरनेट, सोशल मीडिया पर कहीं नहीं हैं, और समाचार पत्र आने वाले दिनों निकलेंगे और हम तक पहुंचेंगे अथवा नहीं, और यह कि ये समाचार पत्र भी कोरोना-वायरस की छुआछूतसे सुरक्षित होंगे अथवा नहीं यह भी स्पष्ट नहीं है , अन्य बहुत सारी चीजों की तरह। कोरोना महामारी की भयावहता तथा इससे जुड़े खतरों से कोई भी पढ़ा-लिखा समझदार व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता। लेकिन इससे सर्वविध समुचितबचाव के साथ ही देश के गांवों, किसानों के जीवन से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।

जैसे कि माननीय प्रधानमंत्री जी की घोषणा में इस देश के शत-प्रतिशत जनसंख्या की भोजन की थाली में भोजन, तथा लगभग साठ प्रतिशत जनसंख्या को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देने वाले

जनसंख्या के रोजगार के मूलाधार कृषि तथा किसानों की व्यवस्था के बारे में एक शब्द भी बोलना निराश कर गया।

1-क्या इन इक्कीस दिनों में देश के गांवों के किसान तथा उनके परिजन अपने खुद के घर से लगी बाड़ी में तथा अपने खेतों में भी, अपनी फसलों की देखभाल करने भी ना जाए तथा खेतों में भी काम काज पूर्णतः बंद रखें?

2- क्या साल भर खून पसीना एक कर की गई कड़ी मेहनत करने की उपरांत खेतों में कटने को तैयार खड़ी फसल को काटने, खलिहान में सुरक्षित लाकर रखने के लिए भी किसान (कोरोनावायरस से बचाव की सभी जरूरी सावधानियां (सोशल डिस्टेंसिंग) रखते हुए भी) घर से बाहर ना निकलें ?? और इस बीच अगर बारिश ,पानी ,बीमारियों, जानवरों से उन फसलों का नुकसान होता है तो क्या देश की जनता कोरोना वायरस से मरने के बजाय आगे फिर भूख से तिल तिल कर न मरेगी?

3- एक कहावत है कि "दुनिया में और सब चीजें बेशक इंतजार कर सकती हैं सिवाय खेती के" तो जिन फसलों को लगाने की तैयारी किसानों ने कर रखी है उन खेतों का तथा और बीज और पौधों का क्या होगा। किसानों को खाद बीज दवाई कैसे मिलेगी। इस बीच फसलों की सिंचाई की क्या व्यवस्था रहेगी? क्या यह सब देश के लिए जरूरी नहीं है।

हमारा मानना है कि इसमें प्रधानमंत्री द्वारा कहा कहीं गई, पर्याप्त तथा पर्याप्त से भी अधिक "सोशल डिस्टेंसिंग" रखते हुए भी भली भांति यह समस्त कार्य संपन्न किए जा सकते हैं।जो हुआ सो हुआ की तर्ज पर, हम यह नहीं कहते कि एक महीने पहले सरकार के द्वारा क्या किया जाना था, या कि, 15 दिन पहले क्या किया जाना था, यह हुआ या यह होना था पर नहीं हुआ, किंतु एक बात समझ से परे है कि संपूर्ण देश में लाक-डाऊन करने के लिए नोटबंदी की तर्ज पर रात 8:00 बजे उद्बोधन करके रात 12:00 बजे से लागू करने के बजाय यदि यह कार्य जनता को विश्वास में लेकर पर्याप्त हर स्तर पर पर्याप्त तैयारी करके समुचित तरीके से भी तो किया जा सकता था यहां मैं ध्यान दिलाना चाहूंगा कि दक्षिण अफ्रीका में भी लाक-आउट किया गया था, पर वहां के नागरिकों को पर्याप्त तैयारी के लिए 2 दिन का समय दिया गया था । क्योंकि इस तरह घोषणा करने के तुरंत बाद बहुसंख्य लोगों ने सारे निर्देशों को ताक पर रखकर जल्दबाजी में सामानों की खरीदारी करने बाजार का रुख किया और पिछले 4 - 5 दिनों तक के जनता कर्फ्यू सोशलडिस्टेंसिंग की पूरी मेहनत मिट्टी में मिल गई।

4- बैंकों से भारी ऋण लेकर जिन किसानों ने फूलों, मसालों औषधीय पौधों की खेती,मंहगे पोली हाउस, नेट हाउस, नर्सरिया, तथा पौध गृह स्थापित किए हैं ,इन छोटे और नाजुक पौधों में रोज खाद, पानी, देखभाल किया जाना बेहद जरूरी होता है ,और खाद, पानी न दिए जाने पर बेशक इनकी पूरी फसलें चौपट होनी तय है। इनके लिए भी कोई व्यावहारिक सुरक्षित विकल्प क्यों नहीं सुझाया जा सकता है। क्या इस अवधि में सुरक्षा, बचाव की जरूरी ऐतिहात बरतने के साथ ही, खाद,बीज, की दवाई की

आपूर्ति जारी नहीं रखी जा सकती। कम से कम किसान तथा किसानों के परिजनों को आपस में समुचित दूरी बनाते हुए खेतों में कार्य करने का जरूरी छोटा सा प्रशिक्षण, समझाइस देकर कार्य करने की अनुमति दी जा सकती है । वैसे भी जब आप शहरों में नाकाबंदी कर देंगे तो गांव में किसी बाहरी आदमी के पहुंचने की संभावना ही समाप्त हो जाएगी। इसी तरह पाली हाउस, और सभी नर्सरिओं के छोटे पौधे जो कि बिना पानी के अभाव में शीघ्र ही मर जाते हैं, की सिंचाई,और देखरेख की भी व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकती है। *कृषि से संबंधित इन सभी बिंदुओं के संदर्भ में सरकार के द्वारा क्तत्काल देशहित में स्पष्ट दिशा निर्देश दिए जाने चाहिए।*

5- बस्तर तथा ऐसे ही अन्य वन क्षेत्रों में रहने वाली जनजातीय समुदायों के महुआ, आम, इमली, तेंदूपत्ता, एकत्र करने का प्रमुख समय है। साल भर में यही कुछ दिनों का समय होता है, जब यह परिवार घरों से निकल करअपने साल भर तक परिवार को चलाने के लायक रोजगार अपने इन परंपरागत अन्नदाता जंगलों से प्राप्त कर पाते हैं। जिन गांव में बाहर से शहरों से कोई भी व्यक्ति नहीं आया है, कम से कम उनकी पहचान कर, उन *वनवासियों के लिए कोई उचित समाधान दिया जाना उचित होगा।*

6- राज्य सरकारें शहरों में रहने वाले दिहाड़ी मजदूरों, ठेला, खोमचे वालों को राशन तथा नगद राहत राशि आदि सहायता देने की बातें तो कर रही है किंतु शहरों के अपंजीकृत मजदूर और गांव में रहने वाले बहुसंख्य कृषि मजदूर जो रोज कुंआ खोदकर पानी पीते हैं , उनके रोजगार को लेकर क्या समाधान होगा, यह भी सोचना जरूरी है।

7- कुल मिलाकर ,इस समय की महती आवश्यकता है कि, सरकार कोरोना वायरस से बचाव हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सभी सुरक्षा तथा बचाव के निर्देशों का अधिकतम कड़ाई से पालन करवाते हुए, उपरोक्त बिंदुओं पर क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार ऐसे व्यावहारिक समाधान निकालेजायें, जिससे कि 'सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे' , और जनता को इसके बारे में भली-भांति जागरूक करके, जरूरी प्रशिक्षण देकर, उसे विश्वास में लेकर, यह बड़ी आसानी से क्या जा सकता है। क्योंकि हम सबका लक्ष्य है कि कोरोना महामारी से हमारे देश में और जनहानि न होने पाए, साथ ही देश को इस अवधि की बंदी से होनेवाली गंभीर दीर्घकालिक हानियों से भी बचाया जाना चाहिए। और इस कार्य में, कोरोना महामारी के खिलाफ इस आर-पार की जंग में हम सब देश तथा सरकार के हर निर्णय, निर्देशों के अक्षरशः पालनार्थ पूरी मजबूती के साथ खड़े हैं।

राजाराम त्रिपाठी rajaramherbal@gmail.com

English Translation of the Above Article on Impact of the Covid-19 Lockdown on Agriculture:

Dr Rajaram Tripathi[3]

"Country Captive" #Lockout has some important questions and solutions of the country's farm and barns: - *

Yesterday morning, a shopkeeper was fined two thousand for the crime of breaking lock-down (which I call a country bandh) in Kondagaon, a small town in Chhattisgarh, and a receipt was also deducted. We all felt that this was a good and necessary action, people also praised this action. This incident may sound very normal, but if the Maharaja can see its implications in the context of agriculture of the entire country, then this phenomenon is not common.

The shopkeeper who was fined was actually a small farmer-center, that is, a small store of fertilizers, seeds, medicines, agricultural implements, where in the early morning yesterday, some farmers of the nearby village had compost-medicines, seeds etc. The farmers had come to pick up, certainly these farmers must have been the old customers and acquaintances of the shop and at the request of those farmers, the shopkeeper would have risked opening the shop and giving them seed manure medicine on this morning.

Now we come to the announcement of the twenty-one day lock-out of the Hon'ble Prime Minister, in this context, first of all we would like to say that we not only support every announcement of the Prime Minister, the Chief Minister, the Central Government and the State Government, Rather, they are also following 100%, and will definitely do so further. But we believe that there are definitely some important points in the context of this lock-out, which is very important in the interest of the country.

I do not know whether these things will reach our honorable Prime Minister #PMONarendraModi ji Chief Minister Bhupesh Baghel ji #BhupeshBaghel ji or related high officials. I do not even know whether my words, directly related to this post of mine, will reach the crores of peasant brothers of the country who are going to be directly affected in these 21 days directly, because most of our peasant brothers are on the internet, Nowhere else on social media, and newspapers will come out in the coming days and reach us or not, and that these newspapers are also protected from the untouchability of Corona-virus. Whether or not they will be saved is not clear, like many other things. No educated intelligent person can deny the horrors of the Corona epidemic and its associated dangers. But this should not be overlooked with the proper rescue and other important aspects related to the life of villages and farmers.

As in the declaration of Hon'ble Prime Minister, food in the food plate of 100% of the population of this country, and about the system of basic agriculture and farmers in the employment of the population employing about sixty percent of the population directly or indirectly. Even the words were disappointing.

[3] Dr Rajaram Tripathi is a former rural banker, who left to establish a set of plantations of medicianl plants and herbs in the Kondagaon area of Bastar, Chhhattisgarh. He is also the Chairman of the Ma Danteswari Herbals Ltd, a phytoceutical processing and export company.

1-In these twenty-one days, the farmers and their families in the villages of the country should not go to the farmyard adjacent to their own house and also to their fields, to take care of their crops and also to keep the work in the fields completely closed.

2- If the farmer has been willing to cut the standing crop ready to be harvested in the fields after working hard throughout the year, keeping the safe in the barn (keeping all the necessary precautions to protect against coronaviruses)) Do not get out of the house ??

And in the meantime if rain, water, diseases, animals cause damage to those crops, then the people of the country will not die of starvation and starvation instead of dying of corona virus?

3- There is a saying that "everything else in the world can of course wait except for agriculture", then what will happen to the fields and other seeds and plants that the farmers have prepared to plant. How will farmers get compost anf seeds? Meanwhile, what will be the arrangement for irrigation of crops?

Is this not necessary for the country?

We believe that the Prime Minister said in this, all these tasks can be done well, keeping adequate and more than enough "social distancing". On the lines of what happened, we do not say that one month What was to be done by the government first, or that, what had to be done 15 days ago, it happened or it was meant to happen but it did not happen, but one thing is beyond comprehension, that the entire country is locked up

If, instead of speaking out at 8:00 pm on the lines of demonetisation and implementing it from 12:00 pm, it could have been done in a proper manner by taking sufficient preparations at every level, taking the public into confidence, Here I would like to note that the lock-out was done in South Africa as well, but the citizens of that place were given 2 days for adequate preparation. Because immediately after making such an announcement, the majority of people followed the instructions and went to the market to shop for goods in a hurry and the entire hard work of the public curfew social distance for the last 4 - 5 days got in the mud.

4 - Farmers who have set up flowers, spices, medicinal plants, expensive poli houses, net houses, nurseries, and plant houses by taking huge loans from banks, these small and fragile plants are very important for daily manure, water, care. It happens, and if the manure and water are not given, then of course their entire crops are set to collapse. Why no practical safe alternative can be suggested for these also.

Can the supply of fertilizers, seeds, medicines, etc. be continued during this period with safety and safety precautions being taken? At least farmers and family members of farmers can be allowed to work by giving the necessary small training and understanding to work in the fields, making proper distance between them. Anyway, when you blockade the cities, the possibility of any outsider reaching the village will be eliminated.

Similarly, arrangements for irrigation, and maintenance of small houses, and small plants of all nurseries that die soon without water scarcity can also be ensured.

* In respect of all these points related to agriculture, clear guidelines should be given by the government in the immediate interest of the country.

5 - Mahua, Mango, Tamarind, Tendupatta, is the prime time to collect tribal communities living in Bastar and other similar forest areas. This is the time of a few days throughout the year, when these families get out of their homes, they can get employment to run their family for the whole year from their traditional food providers forests. In the villages where no person has come from outside, it would be appropriate to at least identify them and give a suitable solution to those * forest dwellers.

6 - The State Governments are talking about giving aid to the daily wage laborers living in the cities, rata, khomchas, rations and cash relief, but the unregistered laborers of the cities and majority of the agricultural laborers living in the village who dug wells and drink water every day , What will be the solution regarding their employment, it is also necessary to think.

7 - Overall, the urgent need of the hour is that the government should come out with such practical solutions as per the regional conditions at the above points, to ensure that all the safety and prevention instructions are strictly followed from the scientific point of view to prevent the corona virus. 'Even the snake dies and the sticks do not break', and by making the public aware of it, by giving them the necessary training, they believe With this, it can be easily achieved. Because we all aim to prevent the Corona epidemic from causing more casualties in our country, the country should also be protected from severe long-term losses from this period of captivity. And in this work, in this war of war against the corona epidemic, we all stand firmly with every decision and instructions of the country and government in letter and spirit.